



पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 13

अंक : 3

नवम्बर, 2025

मूल्य : ₹2.00



। पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम् ।

मार्गदर्शन : कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास

कुलगुरु सन्देश

पशु उत्पादों के प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्द्धन से आमदनी में आशातीत वृद्धि सम्भव

भारत एक कृषि प्रधान देश है जहाँ पशुपालन ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ माना जाता है। हमारे देश में लाखों किसान अपने पशुधन के माध्यम से दूध, मांस, अंडे, ऊन, चमड़ा और मछली जैसे उत्पाद प्राप्त करते हैं। ये पशु उत्पाद न केवल मानव आहार का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, बल्कि इनसे ग्रामीण आय, रोजगार और उद्यमिता के अनेक अवसर भी पैदा होते हैं। इन उत्पादों का यदि वैज्ञानिक और स्वच्छ तरीकों से प्रसंस्करण और उनमें वैल्यू-एडिशन किया जाए तो यह क्षेत्र ग्रामीण विकास और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में अत्यधिक योगदान दे सकता है। पशु उत्पाद प्रसंस्करण का अर्थ है कच्चे पशु उत्पादों को तकनीकी प्रक्रियाओं के माध्यम से इस प्रकार रूपांतरित करना कि वे सुरक्षित, स्वादिष्ट, गुणवत्तापूर्ण और लंबे समय तक टिकने योग्य बन जाएँ। उदाहरण के लिए दूध से दही, पनीर, मक्खन, घी, खोया, मिठाइयाँ और फ्लेवर्ड मिल्क तैयार किया जा सकता है। इसी तरह मांस से सॉसेज, कबाब, ड्राइड मीट, रेडी-टू-कुक व रेडी-टू-ईट फूड बनाए जा सकते हैं। अंडों से एग पाउडर, एग मिक्स या विभिन्न व्यंजन तैयार किए जा सकते हैं, जबकि मछलियों को सूखा कर कैनिंग या अचार के रूप में सुरक्षित रखा जा सकता है। इस प्रकार की प्रक्रियाएँ उत्पादों की शेल्फ लाइफ बढ़ाने के साथ-साथ उपभोक्ताओं के लिए सुविधा और विविधता भी प्रदान करती हैं। वैल्यू-एडिशन का तात्पर्य है किसी उत्पाद की उपयोगिता, आकर्षण और बाजार मूल्य को बढ़ाना। यह केवल उत्पाद का रूपांतरण नहीं बल्कि उसकी गुणवत्ता, पैकेजिंग, स्वाद, पोषण मूल्य और प्रस्तुति में सुधार की प्रक्रिया भी है। उदाहरण के तौर पर यदि किसान केवल कच्चा दूध बेचता है तो उसे सीमित मूल्य प्राप्त होता है, लेकिन उसी दूध को प्रोसेस कर फ्लेवर्ड मिल्क, पनीर या घी के रूप में बेचने पर उसकी कीमत कई गुना बढ़ जाती है। यही प्रक्रिया मूल्य संवर्द्धन कहलाती है। वैल्यू-एडिशन के माध्यम से उत्पाद अधिक प्रतिस्पर्धी बनते हैं और घरेलू तथा अंतरराष्ट्रीय बाजारों में उनकी मांग बढ़ती है। पशु उत्पाद प्रसंस्करण और वैल्यू-एडिशन के अनेक लाभ हैं। सबसे पहला लाभ है आर्थिक सशक्तिकरण इससे किसानों और पशुपालकों की आमदनी में वृद्धि होती है। दूसरा लाभ है रोजगार सृजन क्योंकि इस उद्योग में उत्पादन, पैकेजिंग, विपणन, परिवहन और बिक्री से जुड़ी कई गतिविधियाँ होती हैं। तीसरा लाभ है अपव्यय में कमी, कच्चे उत्पादों के जल्दी खराब होने की संभावना कम होती है, क्योंकि उन्हें सुरक्षित रूप में बदला जा सकता है। चौथा लाभ है गुणवत्ता और पोषण में सुधार, जिससे उपभोक्ताओं को बेहतर और सुरक्षित खाद्य उत्पाद प्राप्त होते हैं। इसके अतिरिक्त यह क्षेत्र निर्यात को भी बढ़ावा देता है और विदेशी मुद्रा अर्जन में सहायक होता है। भारत में इस क्षेत्र की संभावनाएँ अत्यधिक हैं। हमारा देश विश्व का सबसे बड़ा दूध उत्पादक और मांस, अंडा तथा मछली उत्पादन में अग्रणी देशों में से एक है। यदि इन उत्पादों का वैज्ञानिक तरीके से प्रसंस्करण और मूल्य संवर्द्धन किया जाए तो यह ग्रामीण औद्योगिकीकरण और आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य को मजबूत करेगा। प्रशिक्षण, आधुनिक उपकरण, वैज्ञानिक जानकारी और उचित विपणन व्यवस्था से यह क्षेत्र ग्रामीण विकास की धुरी बन सकता है। अंततः कहा जा सकता है कि पशु उत्पाद प्रसंस्करण और वैल्यू-एडिशन केवल एक तकनीकी प्रक्रिया नहीं, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने, रोजगार के अवसर बढ़ाने और भारत को वैश्विक खाद्य उद्योग में अग्रणी बनाने का माध्यम है। यदि इस दिशा में निरंतर प्रयास किए जाएँ तो यह क्षेत्र किसानों की आय दोगुनी करने और देश को आत्मनिर्भर बनाने के लक्ष्य को साकार कर सकता है।



डॉ. सुमंत व्यास

कुलगुरु



किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

-महात्मा गांधी



विश्वविद्यालय समाचार

कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने किया डीन-डायरेक्टर्स के साथ संवाद

वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास की अध्यक्षता में 3 अक्टूबर को विश्वविद्यालय के डीन-डायरेक्टर के साथ संवाद बैठक आयोजित की गई। कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने विश्वविद्यालय में संचालित शैक्षणिक, अनुसंधान, प्रसार कार्यक्रम, प्रशासनिक गतिविधियों एवं वित्तीय प्रगति की समीक्षा की एवं आवश्यक सुझाव प्रदान किए। संवाद बैठक के दौरान विश्वविद्यालय के कुलसचिव पंकज शर्मा, वित्त नियंत्रक अरविंद बिश्नोई, वेटरनरी महाविद्यालय के अधिष्ठाता प्रो. हेमंत दाधीच, निदेशक प्रसार शिक्षा एवं अधिष्ठाता स्नातकोत्तर प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, अधिष्ठाता डेयरी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय प्रो. राहुल सिंह पाल एवं परीक्षा नियंत्रक प्रो. मनीषा माथुर उपस्थित रहे। कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने विश्वविद्यालय के संगठक डेयरी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, बीकानेर एवं पशुधन अनुसंधान केन्द्र, बीछवाल का निरीक्षण भी किया एवं इनके सुदृढीकरण हेतु आवश्यक सुझाव दिये। इस दौरान महाविद्यालय के अधिष्ठाता प्रो. राहुल सिंह पाल, पशुधन अनुसंधान केन्द्र, बीछवाल के प्रभारी डॉ. मोहनलाल चौधरी सहित शैक्षणिक व अशैक्षणिक कर्मचारी उपस्थित रहे।



कौशल विकास के क्षेत्र में राजुवास की नई पहल युवाओं व पशुपालकों के लिए उद्यमशीलता प्रशिक्षण का हुआ शुभारम्भ

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा कौशल विकास केन्द्र के अन्तर्गत उद्यमशीलता प्रशिक्षण आयोजित किये जाने के ब्रोशर का विमोचन 15 अक्टूबर को कुलगुरु डॉ. सुमन्त व्यास के द्वारा किया गया। कुलगुरु डॉ. सुमन्त व्यास ने बताया कि विश्वविद्यालय में कौशल विकास केन्द्र एक नई पहल के साथ प्रगतिशील किसानों, पशुपालकों, युवाओं, स्टार्टअप उद्यमियों के साथ-साथ विद्यार्थियों के लिए बकरी, मुर्गी व डेयरी के क्षेत्र में 7 दिवसीय उद्यमशीलता प्रशिक्षण शुरू करने जा रहा है। इन प्रशिक्षणों का उद्देश्य पशुपालन के क्षेत्र में



व्यावहारिक ज्ञान और व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करना है तथा युवाओं और प्रगतिशील किसानों को पशुपालन क्षेत्र में अपना उद्यम शुरू करने में सक्षम बनाना है। कुलगुरु डॉ. व्यास ने बताया कि बकरी, डेयरी व मुर्गी पालन के क्षेत्र में तीन उद्यमशीलता प्रशिक्षण बीकानेर मुख्यालय पर आरम्भ किये जायेंगे तत्पश्चात क्षेत्र विशेष की मांग पर विश्वविद्यालय के अन्य महाविद्यालयों, पशुधन अनुसंधान केन्द्रों व पशु विज्ञान केन्द्रों पर यह योजना लागू की जायेगी। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि कौशल विकास केन्द्र के तहत उद्यमशीलता प्रशिक्षण कार्यक्रमों में विभिन्न विषयों को शामिल किया जाएगा, जिनमें उन्नत आवास प्रबंधन, उन्नत प्रजनन तकनीकें, रोग प्रबंधन, पोषण प्रबंधन और डेयरी, बकरी, पोल्ट्री तथा अन्य पशु प्रजातियों में समन्वित कृषि पद्धतियां शामिल हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रमों में व्यावहारिक प्रशिक्षण के लिए अनुभवी विशेषज्ञों द्वारा सैद्धांतिक व प्रेक्टिकल सत्र शामिल किए जाएंगे ताकि प्रतिभागियों में व्यावसायिक समझ पैदा की जा सके। इस अवसर पर निदेशक अनुसंधान प्रो. बी.एन. श्रृंगी, डॉ. मोहन लाल गोदारा, डॉ. अरुण झीरवाल व डॉ. संजय सिंह उपस्थित रहे।



प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना कार्यक्रम में पशुपालको की भागीदारी

वैटरनरी विश्वविद्यालय में किसानों एवं पशुपालकों ने 11 अक्टूबर को माननीय प्रधानमंत्री की "पी.एम. धन-धान्य कृषि योजना और दलहन आत्मनिर्भरता मिशन" के ऑनलाइन कार्यक्रम को देखा और सुना। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास के निर्देशन में आयोजित इस कार्यक्रम में लूनकरणसर, गाढवाला, बंबलू एवं कतरियासर के लगभग 98 पुरुष व महिला पशुपालक व किसान शामिल रहे। माननीय प्रधानमंत्री ने कार्यक्रम के दौरान धन-धान्य कृषि योजना और दलहन आत्मनिर्भरता मिशन का शुभारंभ किया। कृषि अवसंरचना कोष, पशुपालन, मत्स्य पालन और खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र की 1100 से अधिक परियोजनाओं का उद्घाटन एवं शिलान्यास किया। यह योजनाएं पशुपालकों एवं किसानों को आधुनिक तकनीक से पशुपालन एवं कृषि को समर्थन प्रदान करने के उद्देश्य से शुरू की गई है। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने उपस्थित पशुपालकों से संवाद भी किया और विश्वविद्यालय की प्रसार एवं अनुसंधान गतिविधियों से अवगत करवाया। पशुपालकों को पशुपालन के वैज्ञानिक तरीके एवं नई तकनीकों को अपनाकर पशुपालन को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने हेतु सुझाव दिया। अधिष्ठाता एवं संकाय अध्यक्ष प्रो. हेमन्त दाधीच, निदेशक अनुसंधान प्रो. बी.एन. श्रृंगी, अधिष्ठाता डेयरी कॉलेज प्रो. राहुल सिंह पाल एवं निदेशक क्लिनिक प्रो. प्रवीण बिश्नोई अधिष्ठाता छात्र कल्याण डॉ. पंकज कुमार थानवी ने पशुपालकों एवं किसानों को सम्बोधित किया। कार्यक्रम आयोजन में डॉ. सुनील जांगीड़, डॉ. प्रियंका कडेल, डॉ. दिवाकर, डॉ. संजय मेहला का सहयोग रहा। कार्यक्रम का संचालन अतिरिक्त निदेशक प्रसार डॉ. देवीसिंह ने किया।



कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने किया पशु विज्ञान केंद्र, लूनकरणसर एवं सूरतगढ का निरीक्षण

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने दिनांक 14 अक्टूबर को पशु विज्ञान केंद्र, लूनकरणसर एवं सूरतगढ का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने केंद्र की विभिन्न गतिविधियों, परियोजनाओं और सुविधाओं का विस्तृत निरीक्षण किया तथा केंद्रों के विकास के लिए महत्वपूर्ण सुझाव प्रदान किए जिसमें एकीकृत कृषि प्रणाली (इंटीग्रेटेड फार्मिंग सिस्टम), प्रयोगशाला और किसानों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम शामिल हैं। कुलगुरु डॉ. व्यास ने इन परियोजनाओं की प्रगति पर चर्चा की। कुलगुरु डॉ. व्यास ने केन्द्र द्वारा संचालित प्रयोगशाला में चल रही पशु रोग निदान और दूध गुणवत्ता की जांचों को भी देखा। इस दौरान पशु विज्ञान केंद्र, लूनकरणसर के प्रभारी डॉ. दिवाकर ने कुलगुरु को केंद्र की प्रमुख गतिविधियों और चल रही परियोजनाओं के बारे में विस्तार से अवगत कराया।





पशु जैव चिकित्सा अपशिष्ट निस्तारण पर जागरूकता कार्यक्रम

वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशु जैव चिकित्सा अपशिष्ट निस्तारण एवं प्रौद्योगिकी केंद्र द्वारा 8 अक्टूबर को राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय गुरुद्वारा, रानी बाजार, बीकानेर में छात्राओं हेतु जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। केन्द्र की प्रमुख अन्वेषक डॉ. दीपिका धूड़िया ने बताया कि बायोमेडिकल वेस्ट के उचित प्रबंधन और निस्तारण पर स्कूली विद्यार्थियों को विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। सहायक प्रध्यापक डॉ. देवेंद्र चौधरी ने अस्पतालों से निकलने वाले जैविकीय अपशिष्ट का मानव स्वास्थ्य व वातावरण पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों से अवगत करवाया। जागरूकता कार्यक्रम के दौरान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता भी आयोजित करवाई गई जिसमें विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया। कार्यक्रम के दौरान डॉ. जयंत स्वामी, विद्यालय की अध्यापिका अमिता पुरोहित व अन्य अध्यापक उपस्थित रहे।



विशेष सूचना

बकरी पालन पर कौशल विकास प्रशिक्षण

26 नवम्बर से 2 दिसम्बर 2025 तक होगा आयोजित

किसान एवं पशुपालक भाईयों नमस्कार, राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा किसानों, पशुपालकों, युवाओं, विद्यार्थियों, स्टार्ट-अप उद्यमियों इत्यादि के लिए बकरी पालन पर सात दिवसीय उद्यमशीलता कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम की शुरुआत दिनांक 26 नवम्बर से 2 दिसम्बर, 2025 तक की जा रही है। इस प्रशिक्षण में भाग लेने के लिए आपको पंजीकरण करवाना होगा। सात दिवसीय प्रशिक्षण का शुल्क मात्र 4000/- रुपये है। इस प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण उपरान्त प्रमाण-पत्र भी दिया जाएगा।

:: अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें ::
निदेशक

प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजुवास, बीकानेर (0151-2200505)
प्रशिक्षण समन्वयक
डॉ. मोहनलाल चौधरी (मोबाईल नं. 9414603842)

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर द्वारा दिनांक 8-9 अक्टूबर को केन्द्र परिसर में दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 25 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ द्वारा दिनांक 13 अक्टूबर को केन्द्र परिसर में तथा दिनांक 30 अक्टूबर को गांव सिलवानी में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 84 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ द्वारा दिनांक 9, 13, 15, 27 29 एवं 31 अक्टूबर को गांव रेजारी, शेरदा, शिमला, खोपड़ा, सोमसीसर एवं ईयारा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 135 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा द्वारा दिनांक 8 अक्टूबर को गांव सुखंवाड़ में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 22 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 7, 8 9 एवं 13 अक्टूबर को गांव 22 एनटीआर, भगवानसर बास एवं उजलवास गांवों में तथा दिनांक 3-6 अक्टूबर को केन्द्र परिसर में कृषक एवं पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 133 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।





पशु मेले - परंपरा, व्यापार और विकास का संगम

भारत एक कृषि प्रधान देश है जहाँ अधिकांश जनसंख्या आज भी गाँवों में निवास करती है और अपनी आजीविका के लिए कृषि एवं पशुपालन पर निर्भर है। किसान के खेतों में काम करने वाले बैल, दूध देने वाली गायें, ऊँट, भेड़ और बकरियाँ केवल पशु नहीं, बल्कि उसकी आर्थिक संपत्ति और जीवन का आधार हैं। ऐसे में पशु मेलों का आयोजन केवल पशुओं की खरीद-फरोख्त का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक समृद्धि का प्रतीक भी है। इसीलिए इन्हें सही अर्थों में “परंपरा, व्यापार और विकास का संगम” कहा जाता है। वैदिक काल से लेकर मध्यकालीन भारत तक इनका उल्लेख मिलता है। पहले इन मेलों का आयोजन धार्मिक उत्सवों और मेलों के साथ होता था, जहाँ लोग पूजा-अर्चना के साथ पशुओं का व्यापार भी करते थे। समय के साथ ये आयोजन व्यवस्थित रूप लेने लगे। राजस्थान का पुष्कर मेला, बिहार का सोनपुर मेला, उत्तर प्रदेश का बहराइच मेला, और हरियाणा का फतेहाबाद मेला आज भी अपने ऐतिहासिक, धार्मिक और व्यापारिक महत्व के कारण प्रसिद्ध हैं। भारत के अलग-अलग राज्यों और स्थानों पर पशु मेलों का आयोजन किया जाता है। अकेले राजस्थान में ही 250 पशु मेले हर साल आयोजित किए जाते हैं।



करती हैं। पशुपालकों को पशुओं के रखरखाव, पोषण और स्वास्थ्य के बारे में जानकारी दी जाती है।

- ❖ साथ ही, उत्तम नस्लों के पशुओं का प्रदर्शन कर नस्ल सुधार के प्रयासों को बल मिलता है। कुछ मेले तो विशेष रूप से नस्ल सुधार प्रदर्शनियों के लिए ही प्रसिद्ध हैं, जहाँ उत्कृष्ट नस्लों को पुरस्कृत किया जाता है।
- ❖ इसके अतिरिक्त, पशु मेलों के कारण आसपास के क्षेत्रों में होटल, ढाबे, परिवहन सेवाएँ, हस्तशिल्प बाजार और अन्य व्यवसायिक गतिविधियाँ भी बढ़ती हैं।
- ❖ सरकार भी पशु मेलों के महत्व को समझते हुए इनके आयोजन में सक्रिय भूमिका निभाती है। पशुपालन विभाग, कृषि विभाग और ग्रामीण विकास मंत्रालय संयुक्त रूप से इन आयोजनों की निगरानी करते हैं।
- ❖ अंत में, पशु मेले पर्यटन का भी माध्यम बनते हैं। पुष्कर और सोनपुर जैसे मेलों में ऊँट, घोड़े और हाथियों की शोभायात्राएँ और प्रतियोगिताएँ देखी जाती हैं, जो पर्यटकों को आकर्षित करती हैं। इससे पर्यटन उद्योग को भी बढ़ावा मिलता है और विदेशी मुद्रा का आगमन होता है।

पशु मेले भारतीय ग्रामीण जीवन की आत्मा हैं। आज जब आधुनिकता और तकनीकी विकास तेजी से बढ़ रहे हैं, तब भी पशु मेलों का महत्व कम नहीं हुआ है। बल्कि अब ये मेले परंपरा और आधुनिकता के सुंदर समन्वय का उदाहरण बनते जा रहे हैं। अतः हमें चाहिए कि हम इन मेलों को संरक्षित करें, इन्हें स्वच्छ, सुरक्षित

डॉ. लोकेश टाक एवं डॉ. मनीषा सिंगोदिया
राजुवास, बीकानेर



सर्दियों में पशुओं के मुख्य रोग और उनके नियंत्रण के उपाय

सर्दियों के दौरान पशुपालकों को पशुओं की देखभाल अत्यंत सतर्कता और सही प्रबंधन के साथ करनी चाहिए। ठंड के मौसम में तापमान में अचानक गिरावट, नमी और ठंडी हवाओं का प्रभाव पशुओं के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर डालता है। यदि इस समय पशु प्रबंधन में लापरवाही बरती जाए तो पशुओं को ठंड लगने, निमोनिया, सर्दी-जुकाम और अन्य संक्रामक बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है। इसलिए यह आवश्यक है कि सर्दियों के मौसम में पशुओं को ठंड से बचाने के लिए विशेष प्रबंध करें, जैसे कि गर्म और सूखा बिछावन, पर्याप्त धूप, और पौष्टिक आहार उपलब्ध कराना। ऐसा करने से न केवल पशुओं की उत्पादकता बनी रहती है, बल्कि उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता भी मजबूत होती है।

सर्दियों में होने वाले मुख्य रोग

निमोनिया

सर्दियों में ठंडी हवा, अत्यधिक नमी और तापमान में अचानक गिरावट के कारण नवजात बछड़ों तथा कमजोर पशुओं में निमोनिया एक आम और गंभीर रोग के रूप में देखा जाता है। यह रोग मुख्य रूप से श्वसन तंत्र को प्रभावित करता है और यदि समय पर ध्यान न दिया जाए तो पशु के जीवन के लिए खतरा बन सकता है।

मुख्य लक्षण:

- ❖ निमोनिया से पीड़ित पशु सुस्त हो जाते हैं।
 - ❖ उनके शरीर का तापमान तेजी से बढ़ जाता है (तेज बुखार)।
 - ❖ सांस लेने में कठिनाई और नाक से पतला या गाढ़ा स्राव निकलता है।
 - ❖ अक्सर खांसी या खर्राटे जैसी आवाजें सुनाई देती हैं।
 - ❖ दूध देने वाले पशुओं में दूध उत्पादन में भी अचानक कमी आ सकती है।
- यदि समय पर ध्यान न दिया जाये अथवा समय पर इलाज नहीं करवाया जाये तो पशु की मृत्यु भी हो सकती है।

नियंत्रण और बचाव:-

- ❖ पशुओं को गर्म, सूखे स्थान और ठंडी हवा से सुरक्षित स्थान पर रखें।
 - ❖ नवजात बछड़ों को जन्म के तुरंत बाद सूखा तौलिया या बोरासे पोंछकर गर्म वातावरण में रखें।
 - ❖ पशुशाला में नमी और ठंडक से बचाव के लिए बोरे, पराली या सूखी घास का बिछावन करें।
 - ❖ अत्यधिक ठंड के दिनों में पशुओं को धूप में रखना लाभदायक होता है।
- यदि पशु में सांस लेने में कठिनाई या तेज बुखार जैसे लक्षण दिखाई दें, तो तुरंत पशु चिकित्सक से उपचार कराना आवश्यक है। एंटीबायोटिक और सपोर्टिव थेरेपी से यह रोग नियंत्रित किया जा सकता है परंतु यह दवाई पशु चिकित्सक की सलाह पर पशुओं को लगाए।

थनैला (मेस्टाइटिस)

ठंड में थन की स्वच्छता न रखने या ठंडी हवा के संपर्क में आने से दुधारू पशुओं में थन में सूजन और संक्रमण हो जाता है।

लक्षण:-

- ❖ पशु का दूध का उत्पादन कम और थनों में सूजन आ जाती है।
- ❖ दूध में फीटकड़ी आने लगती है अथवा खून आने लगती है।

नियंत्रण : दुग्ध दोहन से पहले और बाद में थन को हल्के गर्म पानी से साफ करें, स्वच्छ कपड़े से पोंछें और थन को ठंड से बचाएँ।

खुरपका—मुंहपका

यह संक्रामक रोग सर्दियों में तेजी से फैलता है। दिसम्बर से फरवरी माह में इस रोग का प्रकोप सबसे अधिक होता है।

लक्षण:

- दूध का उत्पादन कम हो जाता है। पशुओं के पैरों में भी घाव होने लगते हैं।
- खुरपका व मुंहपका रोग में पशुओं के मुंह में छाले पड़ जाते हैं। ये छाले जीभ के सिवा मुंह के अंदर अन्य हिस्सों पर दिखाई देते हैं।
- छालों की वजह से पशु चारा खाना बंद कर देता है, नतीजतन पशु की सेहत बिगड़ जाती है।

रोग से बचाव:

- ❖ पशुओं का नियमित टीकाकरण कराएँ ताकि वे संक्रामक रोगों से सुरक्षित रह सकें और उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता मजबूत बनी रहे।
- ❖ चूंकि यह रोग संक्रामक प्रकृति का होता है, इसलिए बीमार पशु को तुरंत स्वस्थ पशुओं से अलग रखें तथा उसका चारा और पानी का प्रबंध अलग से करें, जिससे संक्रमण का प्रसार रोका जा सके।
- ❖ संक्रमित पशुओं को सार्वजनिक जल स्रोतों जैसे नदी, तालाब या पोखर से पानी नहीं पिलाना चाहिए, क्योंकि इससे पानी दूषित होकर अन्य पशुओं में रोग फैल सकता है।
- ❖ पशु को हमेशा सूखे, स्वच्छ और हवादार स्थान पर बांधें ताकि वह नमी और ठंड से सुरक्षित रह सके। संक्रमित पशु को पशु चिकित्सक की सलाह पर पैरों के घावों को पोटेशियम परमेगनेट के घोल से धोये।

रोगग्रस्त पशु की देखभाल करने वाले व्यक्ति को बाड़े से बाहर निकलने पर अपने हाथ—पैर और कपड़े साबुन या कीटाणुनाशक से अच्छी तरह धोने चाहिए ताकि संक्रमण आगे न फैले।

परजीवी संक्रमण (पैरासाइटिक इन्फेस्टेशन)

ठंड में शरीर कमजोर व रोग प्रतिरोधक क्षमता कम होने से परजीवियों का असर बढ़ जाता है।

नियंत्रण : पशुओं को समय—समय पर डीवॉर्मिंग (कृमिनाशक दवा) कराएँ, पशु का बिछावन और शरीर साफ रखें।

पशुओं को सर्दी से बचाने के लिए निम्न बातों को ध्यान रखें:

- ❖ आहार एवं पोषण प्रबंधन—सर्दियों में पशुओं की ऊर्जा की आवश्यकता बढ़ जाती है। अतः उनके आहार में ऊर्जा, प्रोटीन, खनिज लवण, विटामिन और वसा की पर्याप्त मात्रा होनी चाहिए अर्थात् पशुओं को संतुलित आहार दें।
- ❖ पशुओं को गुणगुना पानी पिलाएँ, ठंडा पानी न दें।
- ❖ हरा चारा, तेलिया खली, खनिज मिश्रण और मोलासिस का प्रयोग करें।
- ❖ दूध देने वाले पशुओं में दूध की मात्रा और गुणवत्ता बनाए रखने के लिए संतुलित दाना—पानी का प्रबंध करें।
- ❖ पशुओं का दूध निकालने का समय नियमित रखें ताकि वे तनावमुक्त रहें।
- ❖ पशुओं का समय—समय पर टीकाकरण कराएँ।
- ❖ धूप में नियमित रखना भी रोग नियंत्रण का एक प्राकृतिक उपाय है।
- ❖ पशुशाला में स्वच्छता और सूखापन बनाए रखें।
- ❖ कमजोर व नवजात पशुओं को विशेष देखभाल दें।
- ❖ सर्दियों में पशुओं की उचित देखभाल, संतुलित आहार और स्वच्छ आवास व्यवस्था से अधिकांश बीमारियों को रोका जा सकता है।
- ❖ सतर्कता, स्वच्छता और समय पर उपचार ही पशुपालन में सफलता की कुंजी है। स्वस्थ पशु न केवल अधिक दूध देते हैं बल्कि किसान की आय और समृद्धि का भी आधार बनते हैं।

डॉ. दीपिका धूड़िया

वरिष्ठ सहायक आचार्य, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर



दुधारू पशुओं के चयन में सावधानियां रखें

पशुपालन एवं डेयरी व्यवसाय में दुधारू पशुओं के दूध देने की क्षमता का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान होता है। इसलिए गाय/भैंस की खरीदारी करते समय कुछ विशेष जानकारी होना आवश्यक हो जाता है। दुधारू पशु की खरीद में बहुत बड़ी पूंजी खर्च होती है और इनके अच्छे गुणों के ऊपर ही डेयरी व्यवसाय का भविष्य निर्भर करता है। क्योंकि अच्छी नस्ल और गुणवत्ता के दुधारू पशुओं से ही अधिक दुग्ध उत्पादन हासिल कर पाना सम्भव हो पाता है। इसलिए दुधारू पशु का चयन एवं खरीददारी करते समय अच्छी नस्ल, दोष रहित पूर्णतः स्वस्थ पशु, लंबे ब्यांत, हर साल बच्चा और अधिक दूध देने वाली गाय/भैंस को ही प्राथमिकता देनी चाहिए, जिससे व्यवसाय में लगाई गई पूंजी से अधिक से अधिक मुनाफा प्राप्त किया जा सके। अतः पशुपालक निम्न बातों को अमल में लाकर अच्छी दुधारू गाय/भैंस का चयन कर सकते हैं। ऐसी गाय की पहचान के लिए उसके सामने खड़े हो जाएं। इससे गाय का अगला हिस्सा पतला और पिछला हिस्सा चौड़ा दिखाई देगा। शरीर की तुलना में गाय के पैर एवं मुंह-माथे के बाल छोटे होने चाहिए। दुधारू पशु की चमड़ी चिकनी, पतली और चमकदार होनी चाहिए। आंखें चमकली, स्पष्ट और दोष रहित होनी चाहिए। अयन पूर्ण विकसित और बड़ा होना चाहिए। थनों और अयन पर पाई जाने वाली दुग्ध शिरायें जितनी उभरी और टेढ़ी-मेढ़ी होंगी पशु उतना ही अधिक दुधारू होगा। दूध दोहन के उपरांत थन को पूरी तरह से सिकुड़ जाना चाहिए। चारों थनों का आकार एवं आपसी दूरी समान होनी चाहिए। गाय/भैंस के पेट पर पाई जाने वाली दुग्ध शिरा जितनी स्पष्ट, मोटी और उभरी हुई होगी पशु उतना ही अधिक दूध देने वाला होगा। दुधारू पशु को खरीदते समय हमेशा दूसरे अथवा तीसरे ब्यांत की गाय/भैंस को ही प्राथमिकता देनी चाहिए। क्योंकि इस दौरान दुधारू पशु अपनी पूरी क्षमता के अनुरूप खुलकर दूध देने लगते हैं और यह कम लगभग सातवें ब्यांत तक चलता है। इसके पहले अथवा बाद में दुधारू पशु के दूध देने की क्षमता कम रहती है। दूसरे-तीसरे ब्यांत के पशु को खरीदते समय प्रयास यह होना चाहिए कि गाय/भैंस उस दौरान एक माह की ब्याही हुई हो और उसके नीचे मादा बच्चा हो। ऐसा करने से उक्त पशु के दूध देने की क्षमता का पूरा ज्ञान होने के साथ ही मादा पड़िया अथवा बछड़ी मिलने से भविष्य के लिए एक गाय/भैंस और प्राप्त हो जाती है, जोकि भविष्य की पूंजी है। दुधारू पशु को खरीदते समय लगातार तीन बार दोहन करके देख लें। क्योंकि व्यापारी चतुराई से काम लेते हैं और आपको पशु खरीदते समय मात्र एक बार सुबह अथवा शाम को ही दोहन करके दिखायेंगे। ऐसा करने से आप को प्रतीत होगा कि यह पशु अधिक दूध देने वाला है, लेकिन सच्चाई यह नहीं होती है। व्यापारी एक समय का दोहन नहीं करता अथवा कम दुग्ध दोहन करता है जिससे दूध की मात्रा अयन में रह जाती है। इस कारण लगता है कि गाय/भैंस अधिक दूध देने वाली है। इसलिए दुधारू पशु की खरीददारी करते समय तीन बार लगातार दुग्ध दोहन अपने सामने अवश्य करा लेना चाहिए। दुधारू पशु का चयन करते समय उसकी सही आयु का पता लगाना आवश्यक होता है। पशु की सही आयु का पता लगाने के लिए उसके दांतों को देखा जाता है। मुंह की निचली पंक्ति में स्थायी दांतों के चार जोड़े होते हैं। ये सभी जोड़े एकसाथ नहीं निकलते हैं। दांत का पहला जोड़ा पौने दो साल की उम्र में, दूसरा जोड़ा ढाई साल की उम्र में, तीसरा जोड़ा तीन साल के अन्त में और चौथा जोड़ा चौथे साल के अन्त की उम्र में निकलता है। इस प्रकार से दांतों को देखकर नई और पुरानी गाय/भैंस की सटीक पहचान की जा सकती है। औसतन एक गाय/भैंस 20-22 वर्षों तक जीवित रहती है। गाय/भैंस की उत्पादकता उसकी उम्र के साथ-साथ घटती चली जाती है। दुधारू पशु अपने जीवन के यौवन और मध्यकाल में अच्छा दुग्ध उत्पादन करता है। इसलिए दुधारू पशु का चयन करते समय उसकी उम्र की सही जानकारी होना अत्यंत आवश्यक है।

डॉ. राजकुमार बेरवाल

प्रभारी अधिकारी, पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़

सफलता की कहानी

सुअर पालन से गुरुदेव सिंह प्राप्त कर रहे हैं अच्छी आमदनी

गुरुदेव सिंह पुत्र श्री जगतार सिंह श्री गंगानगर जिले के 15 ए.पी.डी. गांव के निवासी हैं गुरुदेव सिंह के पास खेती योग्य 12 बीघा जमीन है, जिससे ज्यादा आमदनी नहीं होने के कारण इन्होंने खेती के साथ साथ अन्य व्यवसाय शुरू करने की सोची परन्तु सुअर पालन का उचित ज्ञान नहीं होने के कारण यह इसे शुरू नहीं कर पा रहे थे कुछ समय बाद गुरुदेव सिंह जी पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ के सम्पर्क में आये और यहां के वैज्ञानिकों से सुअर पालन की जानकारी प्राप्त की इसके बाद इन्होंने सुअर पालन का प्रशिक्षण भी पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ से प्राप्त किया। इसके बाद 20 सुअरों से अपना व्यवसाय प्रारम्भ किया गुरुदेव सिंह जी को इस व्यवसाय से अच्छी आमदनी होने लगी जिससे गुरुदेव सिंह ने इस व्यवसाय को आगे बढ़ाने का सोचा। धीरे-धीरे इन्होंने अपने व्यवसाय को ओर बड़ा बना लिया पहले ये इन पशुओं को व्यापारियों को बेचते थे लेकिन फिर अपने क्षेत्र में मीट की मांग को देखते हुए इन्होंने कटिंग का कार्य प्रारम्भ कर दिया गुरुदेव सिंह जी बताते हैं कि इनके यहां मीट की मांग दिनो दिन बढ़ती जा रही है गुरुदेव सिंह जी पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ के वैज्ञानिकों से सम्पर्क करते रहते हैं यह अपने पशुओं का समय पर टीकाकरण भी स्वयं कर लेते हैं। फार्म में अन्य काम जैसे- नवजात बच्चों के दांत काटना, जानवरों का बधीयाकरण करना, कृमिनाशक दवाईयां देना आदि कार्य समय-समय पर स्वयं करते हैं। गुरुदेव सिंह जी के पास अपने फार्म पर वर्तमान में 200 सुअर हैं जिसमें से 20 मादा सुअर हैं 1 मादा सुअर अपने 1 ब्यांत में 10 से 15 बच्चों को जन्म देती है गुरुदेव सिंह जी अपने इस व्यवसाय से सालाना लगभग 10 से 12 लाख रुपये की आमदनी प्राप्त कर लेते हैं। गुरुदेव सिंह जी अपने इस व्यवसाय से अपने क्षेत्र में अन्य लोगों के लिए प्रेरणा स्रोत बने हैं गुरुदेव सिंह जी समय-समय पर पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ के वैज्ञानिकों को अपने फार्म पर बुलाकर अपने क्षेत्र के लोगों को सुअर पालन व्यवसाय की जानकारी भी दिलाते रहते हैं गुरुदेव सिंह जी अपने इस व्यवसाय से बहुत खुश हैं वह अपनी इस सफलता का श्रेय अपने परिवारजनों और पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ के वैज्ञानिकों को देते हैं।



सम्पर्क: श्री गुरुदेव सिंह

गांव 15 ए.पी.डी., जिला-श्रीगंगानगर (मो.नं.9549472689)



निदेशक की कलम से...



पशुपालन पर उद्यमशीलता प्रशिक्षण से कौशल विकास : आत्मनिर्भरता की दिशा में एक कदम

भारत एक कृषि प्रधान देश है जहाँ अधिकांश आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। यहाँ पशुपालन न केवल आजीविका का साधन है, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ भी है। दुग्ध उत्पादन, डेयरी व्यवसाय, बकरी पालन, मुर्गी पालन या मत्स्य पालन ये सभी ऐसे क्षेत्र हैं जिनसे ग्रामीण परिवार अपनी आमदनी को बढ़ा सकते हैं, लेकिन बदलते समय में केवल पारंपरिक तरीके पर्याप्त नहीं हैं। अब आवश्यकता है उद्यमशीलता प्रशिक्षण के माध्यम से पशुपालन को एक संगठित, आधुनिक और लाभकारी व्यवसाय के रूप में विकसित करने की। उद्यमशीलता प्रशिक्षण व्यक्ति को केवल काम करना नहीं सिखाता, बल्कि उसे स्वयं का व्यवसाय स्थापित करने की दिशा में प्रेरित करता है। यह प्रशिक्षण

व्यक्ति में आत्मविश्वास, निर्णय लेने की क्षमता, संसाधनों का सही उपयोग, जोखिम प्रबंधन और विपणन कौशल जैसे गुणों का विकास करता है। जब यही प्रशिक्षण पशुपालन जैसे क्षेत्र में जोड़ा जाता है तो इसका परिणाम केवल दूध या उत्पाद बढ़ाने तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह ग्रामीण विकास और रोजगार सृजन का माध्यम बन जाता है। पशुपालन में उद्यमशीलता का अर्थ है पशुओं की देखभाल और उत्पादन से आगे बढ़कर पूरे व्यवसाय को एक संगठित ढांचे में विकसित करना। उदाहरण के लिए यदि कोई व्यक्ति केवल गाय या बकरी पालता है तो वह सीमित आमदनी तक ही रह जाएगा लेकिन यदि वह उद्यमशीलता प्रशिक्षण लेकर दुग्ध उत्पादन, दुग्ध प्रसंस्करण, पैकेजिंग, विपणन, और ब्रांडिंग की समझ विकसित करे तो वह अपने उत्पाद को स्थानीय और क्षेत्रीय बाजारों तक पहुँचा सकता है। यही असली कौशल विकास है जो व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाता है। सरकार, विश्वविद्यालय और विभिन्न संस्थाओं द्वारा आज ग्रामीण युवाओं और महिलाओं के लिए ऐसे अनेक प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं जिनमें पशुपालन से जुड़े आधुनिक तकनीकी ज्ञान, पोषण प्रबंधन, रोग नियंत्रण, डेयरी प्रबंधन और वित्तीय योजना जैसे विषय शामिल हैं। ये प्रशिक्षण ग्रामीण युवाओं को केवल रोजगार के अवसर नहीं देते बल्कि उन्हें उद्यमी बनने की दिशा में भी अग्रसर करते हैं। यदि ग्रामीण क्षेत्र का हर युवा और महिला उद्यमशीलता प्रशिक्षण लेकर पशुपालन को एक छोटे उद्योग के रूप में विकसित करे तो इससे न केवल उसकी आय बढ़ेगी बल्कि स्थानीय स्तर पर रोजगार के नए अवसर भी उत्पन्न होंगे। इससे देश की अर्थव्यवस्था मजबूत होगी और आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य को साकार करने में महत्वपूर्ण योगदान मिलेगा। अंततः कहा जा सकता है कि उद्यमशीलता प्रशिक्षण से पशुपालन केवल आजीविका नहीं, बल्कि आर्थिक स्वतंत्रता और सामाजिक सशक्तिकरण का माध्यम बन सकता है। इसलिए अब समय आ गया है कि हम पारंपरिक पशुपालन से आगे बढ़ें, नए कौशल सीखें और अपने गाँव से ही विकास की नई कहानी लिखें।

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

“धीणे री बात्यां”

पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम

माह के तीसरे गुरुवार को

सायं 5.30 से 6.00 बजे तक

प्रदेश के 17 आकाशवाणी

केन्द्रों से प्रसारण



पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी

प्राप्त करने के लिए

टोल फ्री हैल्पलाइन

1800 180 6224

मुख्य संपादक

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया

संपादक

डॉ. संजय सिंह

डॉ. वैशाली

संकलन सहयोगी

सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली

प्रसार शिक्षा निदेशालय

0151-2200505

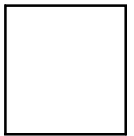
email : deerajuvass@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख /
विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में



स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया